पी ए यू की गेहूं की किस्म पी बी डब्लयू 803 को मंज़ूरी

गेहूं की किस्म एच डी 3086 को साल 2015 के दौरान जारी किया गया और किसानों ने इस को काफ़ी पसंद किया पर इस पर पीला रतुआ रोग का हमला होने लगा जिसको देखते हुए पंजाब कृषि विश्विद्यालय (पी ए यू), लुधियाना के वैज्ञानिकों ने इस का संशोधित रूप तैयार किया है जिसे पी बी डब्लयू 803 का नाम दिया गया है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई सी ए आर) के उप महानिदेशक टी आर शर्मा की अध्यक्षता वाली केंद्रीय उप-समिति द्वारा खेती के लिए इस किस्म को मंज़ूरी दे दी गई है। पी बी डब्लयू 803 भूरा रतुआ रोग को पूरी तरह से और पीला रतुआ को मध्यम रूप से सहन कर सकती है।

इसका औसत कद 100 सेंटीमीटर है और यह पकने में 151 दिन लेती है। अनुसंधान और अनुकूल प्रयोगों में, पी बी डब्लयू 803 ने एच डी 3086 की तुलना में 5% अधिक उपज प्राप्त की।

लंबा समय लेने वाली धान की किस्मों की खेती करने वाले इलाकों, जहां पर अब बुवाई शुरू हो रही है, के लिए पी बी डब्लयू 803 उपयुक्त है। इन इलाकों में गेहूं पकने के समय तापमान अधिक होने के कारण अन्य किस्मों की पैदावार कम होती है पर यह मोटा दाना बना लेती है।

यह किस्म सामान्य परिस्थितियों के साथ-साथ खारे पानी और चूनेकार मिट्टी के लिए उपयुक्त है। इस किस्म की बीज पंजाब के अलग-अलग ज़िलों में स्थित पी ए यू के अनुसंधान केंद्रों, कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि सलाहकार सेवा केंद्रों और बीज फार्मों पर उपलब्ध है।